।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

Baat Hindustan ki

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

R N I No. : WBHIN / 2021 / 84049

• विक्रम संवत 2081 भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी, 16-30 सितम्बर 2024 , 16-30 Sept. 2024, • वर्ष 4 (Year-4), • अंक 9 • पृष्ठ 4 (Page-4) • मूल्य रु.2 (Price 2/-)

'एक राष्ट्र, एक चुनाव' पर बढ़ रही केंद्र सरकार

क्या विपक्षी दलों का भी मिलेगा साथ?

नई दिल्ली : नरेंद्र मोदी कैबिनेट ने राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर हर पांच साल में एक साथ चुनाव कराने के कोविंद समिति के 'एक देश-एक चुनाव' प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। इसके लिए संविधान में बदलाव की जरूरत होगी, जिसके लिए बीजेपी और उसके सहयोगियों के पास फिलहाल लोकसभा और राज्यसभा में जरूरी दो-तिहाई बहुमत नहीं है। गृह मंत्री अमित शाह ने ऐलान किया है कि तमाम बाधाओं के बावजूद नरेंद्र मोदी के तीसरे कार्यकाल में हकीकत बन जाएगा। विपक्षी दल इसका विरोध कर रहे हैं और उनका कहना है कि वे ऐसा कभी नहीं होने देंगे। माना जा रहा है कि बीजेपी दोनों सदनों में जरूरी बहुमत हासिल करने में नाकाम रहेगी। ऐसे में यह सब धरा का धरा रह जाएगा। यानी देश में हर कुछ महीने पर राष्ट्रीय या राज्य स्तर पर चुनाव होते रहेंगे। यह आदर्श स्थिति तो नहीं है, लेकिन लोकतंत्र में शोर-शराबा तो होता ही है और इसमें मनमाफिक परिणाम हासिल करना आसान नहीं होता। अतीत में, बीजेपी ने ऐसे बहुमत हासिल किए हैं जो पहले मौजूद नहीं थे। लेकिन आम चुनाव परिणामों के बाद राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव आया है और आने वाले महाराष्ट्र और हरियाणा विधानसभा चुनावों में मिलने वाली संभावित हार को देखते हुए कहा जा सकता है कि अब हवा उसके पक्ष में नहीं है। दूसरी ओर, आम चुनाव के बाद से विपक्ष में नई जान आई है और वह इस प्रस्ताव का डटकर विरोध करेगा।

दोनों पक्ष औपचारिक रूप से अपनी बात कह रहे हैं, लेकिन अंदरखाने की सियासत कुछ और ही है। बीजेपी का कहना है कि मौजूदा व्यवस्था में हर कुछ महीने में कोई न कोई चुनाव होता रहता है, जो आर्थिक विकास और सुशासन के लिए अच्छा नहीं है।

चुनाव से पहले आचार संहिता लागू हो जाने के कारण कोई भी बड़ा फैसला नहीं लिया जा सकता। ऐसे में लगातार चुनावों से त्वरित फैसले लेने और उनके तुरंत क्रियान्वयन में बाधा आती है। आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का काम पूरी गति से आगे बढ़ने की बजाय बार-बार अटक जाता है। कई मौजूदा सरकारें सुशासन पर ध्यान देने की बजाय लोकलुभावन वादे करने में लग जाती हैं। बार-बार चुनाव लड़ने के लिए भारी धनराशि की जरूरत होती है। चुनावी चंदे में काले धन का इस्तेमाल होता आया है और सुप्रीम कोर्ट द्वारा चुनावी बॉन्ड कानून को रद्द किए जाने के बाद यह प्रवृत्ति और भी तेज होगी।

बीजेपी की दलीलें वाजिब हैं। लेकिन, निश्चित रूप से का समर्थन करने के पीछे बीजेपी का सबसे बड़ा मकसद राजनीतिक है। हालिया आम चुनाव में मिली हार के बावजूद मोदी का राजनीतिक कद काफी बड़ा है। वह अपनी पार्टी से कहीं ज्यादा लोकप्रिय हैं। यदि सभी चुनाव एक साथ होते हैं, तो राष्ट्रीय स्तर पर मोदी की लोकप्रियता का असर राज्य और स्थानीय चुनावों में बीजेपी के प्रदर्शन पर पड़ सकता है। बीजेपी का को लेकर इतना उत्सुक होने के पीछे सुशासन की चिंता से कहीं ज्यादा यही वजह है।

कांग्रेस के नेतृत्व वाला विपक्ष इसी वजह से एक साथ चुनाव कराने का विरोध कर रहा है। उन्हें डर है कि अगर सारे चुनाव एक साथ हुए तो मोदी के रहते उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। लेकिन यह दलील इतनी स्वार्थी है कि विपक्ष इसे उजागर नहीं करना चाहेगा। विपक्षी दल कई ऐसे मुद्दे उठा रहे हैं जिनकी कोई खास वजह नहीं है, जैसे कि एक साथ चुनाव कराना संघीय भारत की भावना के खिलाफ है। हालांकि, आजादी के बाद से 1967 तक सभी चुनाव एक साथ ही होते थे। 1967 में दलबदल, राज्य सरकारों के गिरने और बार-बार मध्यावधि चुनाव होने से एक नए युग की शुरुआत हुई। आजादी के बाद दो दशकों तक एक साथ चुनाव कराने वाली कांग्रेस का यह कहना कि ऐसी व्यवस्था से संघवाद, लोकतंत्र, विकेंद्रीकरण और दूसरी तमाम स्वतंत्रताओं का अंत हो जाएगा, बेमानी की हद है। विपक्ष एक और मजबूत तर्क यह दे सकता है कि अगर लगातार चुनाव होने से फैसले लेने और उन्हें लागू करने में वाकई दिक्कत आती है, तो भारत की जीडीपी वृद्धि दर अब तक की सबसे मजबूत कैसे है, जिसकी विश्व बैंक, और दुनिया भर के निवेश विश्लेषक तारीफ कर रहे हैं? जो चीज पहले से ठीक है, उसे ठीक करने की कोशिश क्यों की जा रही है? इसका जवाब यह है कि अगर भारत को लगातार चुनावों से निजात मिल जाए तो वह और भी बेहतर प्रदर्शन कर सकता है। अगर विकास दर में हर साल सिर्फ 0.2% की बढ़ोतरी भी होती है, तो चक्रवृद्धि की शक्ति के कारण लंबी अवधि में यह बहुत बड़ा फायदा होगा। दोनों पक्षों की बात मानते हुए भारत को हर पांच साल में एक की बजाय दो बार चुनाव कराने चाहिए। राष्ट्रीय और स्थानीय चुनाव हर पांच साल में एक साथ होने चाहिए। राज्य विधानसभाओं के चुनाव राष्ट्रीय चुनावों के बीच में कराए जाने चाहिए। अगर कोई सरकार गिर जाती है, तो बाकी के कार्यकाल के लिए ही नए सिरे से चुनाव कराए जाने चाहिए। अमेरिका की व्यवस्था कुछ-कुछ ऐसी ही है। अमेरिका में कांग्रेस के चुनाव राष्ट्रपति चुनावों के बीच में होते हैं। चुनावों के बीच चार या पांच साल का अंतराल बहुत लंबा होता है और इससे मतदाताओं को जल्दी-जल्दी अपनी नाराजगी जाहिर करने का मौका नहीं मिल पाता। बदलाव तो जरूरी है। लेकिन यह बदलाव 'एक राष्ट्र, दो चुनाव' के रूप में होना चाहिए।

पितृपक्ष में ध्यान रखें ये बातें, धन वर्षा के साथ दूर होंगी समस्याएं

पितृ पक्ष में पितर धरती पर अपने परिजनों के यहां आते हैं और 15 दिन खाने-पीने के बाद वापस अपने लोक चले जाते हैं। इससे प्रसन्न होकर वह सुख-समृद्धि का आशीर्वाद भी देते हैं क्योंकि पितर देवताओं के समान ही समर्थवान होते हैं। इसलिए इन दिनों ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे पितृगणों की आत्मा को कष्ट पहुंचे और वह आपसे नाराज हो जाएं। पितृ पक्ष में पूर्वजों को प्रसन्न करने के लिए शास्त्रों में कुछ उपाय बताए गए हैं, साथ ही कुछ बातों पर विशेष तौर पर ध्यान देना चाहिए। आज हम आपको कुछ ऐसी बातें बताने जा रहे हैं, जिनको करने से ना सिर्फ पितृगण खुश होंगे बल्कि उनके आशीर्वाद से सभी समस्याएं दूर होंगी और घर में सुख समृद्धि बढ़ेगी।

इस तरह पकड़ें भोजन के पात्र : श्राद्ध कर्म के दौरान ब्राह्मण भोज कराते समय भोजन के पात्र के दोनों हाथों से पकड़कर लाना चाहिए। एक हाथ से भोजन का पात्र पकड़ने से भोजन का अंश राक्षसों को जाता है। साथ ही ब्राह्मण भोज कराने के बाद भी पितृगण भोजन का अंश ग्रहण नहीं करते। दोनों हाथों से भोजन का पात्र पकड़ने से आप उनके प्रति आदर भी व्यक्त करते हैं, जिससे वह प्रसन्न होकर धन संबंधी समस्या भी दूर करते हैं।

इनको भी कराएं भोजन : पितृ पक्ष में ब्राह्मण भोज के साथ जमाई, भांजा, मामा, गुरु, नाती और साधु-संतों को भी भोजन करना चाहिए। पितृ पक्ष में इनका स्थान भी सर्वोपरि माना गया है। इससे पितृगण बेहद प्रसन्न होते हैं और सदा खुश रहने का आशीर्वाद भी देते हैं।

मनोरथों की होती है पूर्ति : शास्त्रों के अनुसार श्राद्ध हमेशा उस तिथि को करना चाहिए, जिस तिथि में पूर्वज गमन करते हैं। मृत्युतिथि पर ही पितरों को तर्पण विधि और श्राद्ध कर्म करना चाहिए। ऐसा करने से भी मनोरथों की पूर्ति होती है। वहीं जिन लोगों की मृत्युतिथि की जानकारी न हो तो शास्त्रों में कुछ तिथियां बताई गई हैं, उन दिनों में श्राद्ध कर्म कर लेना चाहिए। वहीं पितृ पक्ष की अमावस्या के दिन भी श्राद्ध कर्म पूर्ण कर सकते हैं।

नहीं करें इनका अपमान : पितृ पक्ष के दौरान द्वार पर आए हुए किसी भी जीव का अपमान और उसके साथ गलत व्यवहार नहीं करना चाहिए। आदर के साथ भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए और फिर दान दें। पितृपक्ष में हर रोज सबसे पहले भोजन का एक हिस्सा गाय, कुत्ता, कौआ, बिल्ली को दे देना चाहिए। मान्यता है कि इनको दिया गया भोजन सीधे पितर ग्रहण करते हैं।

हर रोज यहां जलाएं दीपक : शाम के समय हर रोज घर के मेन गेट पर पितरों के नाम का एक दीपक जलाना चाहिए। दीपक जलाने के बाद पितृगणों का ध्यान करना चाहिए और उनको अपनी समस्याओं के बारे में बताएं और खुशहाली की प्रार्थना करनी चाहिए। इसके अलावा आप एक दीपक पीपल के पेड़ के नीचे भी जला सकते हैं। पीपल के पेड़ भी देवताओं के साथ पूर्वजों का भी वास होता है।

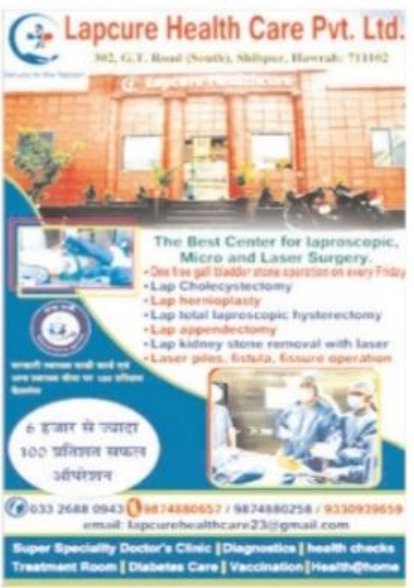

टिकियापाड़ा कारशेड में पानी जमा होने के लिए रेलवे जिम्मेदार नहीं : हावड़ा डिवीजन

हावड़ा : क्या आप मानसून के दौरान कार्यालय आने में नियमित रूप से देर से आते हैं? देरी का कारण लाइन में पानी है लेकिन ये बाढ़ भारतीय रेलवे पर भी गुस्सा पैदा कर रही है लेकिन हकीकत में तस्वीर कुछ और ही है। कम से कम रेलवे अधिकारियों की तो यही कहना है। रेलवे के मुताबिक, हावड़ा के रेलवे ट्रैक एक सदी से भी पहले बनाए गए थे। लेकिन उस क्षेत्र के निवासी बहुत बाद में बसे। चूंकि यह इलाका अब काफी घना हो गया है, इसलिए शहर का पानी रेलवे लाइन और आसपास के इलाकों में घुस जाता है। रेलवे ने जमा पानी को पंप से निकालने की व्यवस्था की है लेकिन आसपास के रिहायशी इलाकों में जल निकासी की समस्या के कारण ये प्रयास सफल नहीं हो पा रहे हैं। वर्तमान में कारशेड क्षेत्र में कुल 19 ट्रैक हैं जिनमें से 8 लाइनें खुली हैं और 11 लाइनें छायादार हैं। कारशेड टिकियापाड़ा कोचिंग कॉम्प्लेक्स और इसके सभी प्रशासनिक और रखरखाव भवनों सहित लगभग 249,000 वर्ग मीटर के क्षेत्र को कवर करता है। इसी तरह झील साइडिंग में 19 ट्रैक हैं।

कार शेड और झील साइडिंग में मौजूदा जल निकासी व्यवस्था : टिकियापाड़ा कोचिंग कॉम्प्लेक्स की नालियाँ एक तरफ दशरथ घोष लेन के नगर निगम के नालों से और दूसरी तरफ रेलवे पुल नंबर 2 के माध्यम से बाईपास रोड नालियों से जुड़ी हुई हैं। कारशेड में 2 मौजूदा कुओं से अपशिष्ट जल एकत्र करने की अनुमति दी गई थी इसके लिए 163 क्यूबिक मीटर प्रति घंटे की पंपिंग क्षमता वाले 2 कम क्षमता वाले पंप लगाए गए थे इसके द्वारा पानी को बाहर निकाला जाता है। समस्या यह है कि हावड़ा छोर पर पानी जमा होने के बाद, उस पानी की एक बड़ी मात्रा कुएं में ही वापस आ जाती है, जिसके परिणामस्वरूप बहुत अच्छे परिणाम नहीं मिलते हैं। वर्तमान में कुओं से गाद निकाली जाती है और 903 घन मीटर प्रति घंटे की पंपिंग क्षमता वाले उच्च क्षमता वाले पंप स्थापित किए गए हैं। इनके माध्यम से अब झील साइडिंग स्थित नवनिर्मित कुआं नंबर 03 में पानी पहुंचाया जा रहा है। इस कुएं से पानी फिर नवनिर्मित कुआं

नंबर 04 और फिर कुआं नंबर 05 में जाता है और अंत में गंगा नदी में जाता है। गौरतलब है कि बारिश का पानी निकालने के लिए हाल ही में प्रत्येक कुएं में 903 क्यूबिक मीटर प्रति घंटे की क्षमता वाले पंप लगाए गए हैं। इसी तरह झील साइडिंग में भी जल निकासी व्यवस्था कुछ ऐसी ही है बारिश के पानी को पंपों के माध्यम से चांदमारी पुल की ओर बहा दिया जाता है और यह पानी डबसन रोड से होते हुए गंगा में प्रवाहित हो जाता है।

निकटवर्ती आवासीय क्षेत्रों में पानी भर जाने से जलजमाव की समस्या उत्पन्न हो गयी है:

समस्या यह है कि बारिश के दौरान रेलवे लाइन के दोनों तरफ की नालियां डूब जाती हैं और पानी विपरीत दिशा में बहकर टिकियापाड़ा कोचिंग कॉम्प्लेक्स में घुस जाता है। इसके अलावा दक्षिण पूर्व रेलवे के कारशेड क्षेत्र का पानी भी इसी नाले में डाला जाता है, लेकिन बाहरी नाला ओवरफ्लो होने के कारण यह पानी टिकियापाड़ा कोचिंग कॉम्प्लेक्स में भी घुस जाता है।

लगातार बारिश के दौरान, हावड़ा छोर से भारी पानी ट्रैक के माध्यम से टिकियापारा में पिट-1 की ओर बहता है। कारशेड क्षेत्र में, यह देखा गया है कि पास के फकीर बागान क्षेत्र, नंदीबागान क्षेत्र और कपूर गली क्षेत्र से वर्षा का पानी हावड़ा किनारे से प्रवेश करता है और कारशेड में बाढ़ आ जाती है। झील साइडिंग इलाके का नाला गुलमोहर इलाके के नाले से जुड़ा है लेकिन गुलमोहर में जलजमाव के कारण झील साइडिंग के नाले का पानी भी ओवरफ्लो हो रहा है।

नवनिर्मित जल निकासी प्रणाली के बावजूद, भारी बारिश से नगर पालिका के बड़े क्षेत्र जलमग्न हो गए। परिणामस्वरूप, हमारे कारशेड और झील साइडिंग क्षेत्र भी जलमग्न हो जाते हैं। लेकिन अब स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ है इन जगहों पर अगर पानी जमा भी हो जाए तो ज्यादा देर तक नहीं टिकता लेकिन समस्या पूरी तरह हल नहीं हुई है कुछ और काम करने की जरूरत है वैकल्पिक व्यवस्था खोजना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि नगर निगम की सीवेज प्रणाली बहुत अच्छी नहीं है।

झील साइडिंग, हावड़ा कारशेड और टिकियापाड़ा कोचिंग कॉम्प्लेक्स में जलजमाव की इस समस्या से निजात पाने के लिए शहर के स्थानीय अधिकारियों के सहयोग की भी जरूरत है। रेलवे प्राधिकरण उनसे आस-पास के क्षेत्रों में एक सुनियोजित और प्रभावी जल निकासी व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग का हाथ बढ़ाने की अपेक्षा करता है।

श्री जैन विद्यालय हावड़ा में छात्रों ने मनाया धूमधाम के साथ शिक्षक दिवस

हावड़ा : हावड़ा स्थित श्री जैन विद्यालय में डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म जयंती के अवसर पर शिक्षक दिवस समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों द्वारा गीत नृत्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती इंदु जोसेफ चौधरी द्वारा बच्चों ने केक कटवा कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।इस विशेष अवसर पर विद्यालय के शिक्षक प्रतिनिधि संतोष कुमार तिवारी,संजय सिंह,सतीश सिंह, प्रणवेश कुमार मिश्रा,सरिता सिंह, अनामिका तिवारी, इंद्राणी गांगुली,जगत नारायण सिंह,सोमेन चक्रवर्ती, रामपुकार शर्मा सहित सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रहे। विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती इंदु जोसेफ चौधरी ने बच्चों को डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं के महत्व को समझाया और उन्हें अपने जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी।विद्यालय के सचिव श्री ललित कांकरिया जी ने शिक्षक दिवस की पावन अवसर पर सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं को शुभकामनाएं दी।

जानवरों की मौत रोकने के लिए रेलवे की नई पहल

लाइन के किनारे लगाई जा रही विशेष बाड़

हावड़ा : देश के ज्यादातर हिस्सों में 160 किमी स्पीड वाली ट्रेनें चल रही हैं। परिणामस्वरूप, सुरक्षा में कोई कमी नहीं रहनी चाहिए। देशभर में लाइनों के किनारे स्टील की 'सेफ्टी फेंसिंग' लगाई जा रही है। डब्ल्यू-बीम धातु प्रकार की बाड़ लगाने का कार्य प्रगति पर है। हावड़ा डिवीजन में वंदे भारत एक्सप्रेस के लिए हावड़ा और खाना के बीच ऐसी सुरक्षा बाड़ लगाने का काम लगभग पूरा हो चुका है। हावड़ा डीआरएम संजीव कुमार ने कहा कि अब ट्रेन की स्पीड बढ़ रही है। इस तरह की बाड़ 130 किलोमीटर स्पीड वाली लाइनों पर भी लगाई जाएगी। इस तरह की फेंसिंग सैथिया-रामपुरहाट-गुमानी तक लगाई जाएगी। जैसे-जैसे ट्रेनों की संख्या बढ़ती गई, गति में भी बदलाव किया गया। अभी तक सबसे तेज गति वाली ट्रेन राजधानी एक्सप्रेस थी। उनकी गति 130 किलोमीटर प्रति घंटा थी। बंदे भारत एक्सप्रेस अब हावड़ा से एनजेपी, पुरी, पटना और रांची तक चल रही है। परिणामस्वरूप, हावड़ा-रामपुरहाट, हावड़ा-खड़गपुर आदि शाखाएँ अब बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह बाड़ मुख्य रूप से मवेशियों की सुरक्षा के लिए है। जब ये गाय-भैंस अचानक लाइन पर आ जाती हैं तो ट्रेन से टकरा जाती हैं। परिणामस्वरूप पशु की मृत्यु हो जाती है। ट्रेन भी क्षतिग्रस्त हो गई। इसके बाद ट्रेन फंस जाती है और समय पर गंतव्य तक नहीं पहुंच पाती है। इन समस्याओं से बचने के लिए सुरक्षा बाड़ लगाना अब बहुत महत्वपूर्ण है। जानवरों की सुरक्षा के लिए अब देश में लगभग 20 प्रतिशत रेलवे लाइनों पर बाड़ लगा दी गई है। जो लगभग चार हजार किलोमीटर बताई जाती है। पहले इसे लाइन के किनारे क्रॉस पिलर पर लगाया जाता था। बाद में रखरखाव में कठिनाई के कारण इसे लोहे की चौड़ी प्लेटों से घेर दिया गया। अब उसे भी बदलकर डब्ल्यू बीम मेटल टाइप फेंसिंग कर दिया गया है। मूलतः लागत कम और मजबूत। इसके अलावा, यह बाड़ इस तरह से बनाई गई है कि गाय और भैंस लाइन पार नहीं कर सकें।

बढ़ती तकनीक व प्रगति दौड़ में समाज की अपेक्षाएं

ई. आर. के. जायसवाल

हावड़ा : हम सभी इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने जा रहे हैं और हम सभी फक्र के साथ कह सकते हैं कि हम और हमारा समाज नई तकनीकों के साथ सभी ऊंचाईयों को छू रहे हैं। बढ़ती तकनीकीकरण व प्रगति के साथ-साथ कॉरपोरेटों की सोच और दिशा बदलना बेहद जरूरी है क्योंकि हम और हमारे समाज की सारी अपेक्षाएं इन्हीं पर निर्भर करती है। कुछ पिछले सदी के संदर्भों को देखें तो परिणाम आश्चर्यचकित करने वाला है। हम कुछ उदाहरणों पर गौर करते हैं, कोडक कंपनी याद होगा दुनिया की लगभग 85% फोटोग्राफी कोडक कैमरों से की जाती थी। 1997 में कोडक के पास लगभग 160000 कर्मचारी थे। पिछले कुछ सालों में मोबाइल कैमरों के उदय के साथ कोडक कैमरा कंपनी मार्केट से गायब हो गई है। यहां तक कि कोडक पूरी तरह से दिवालिया हो गई और उसके सभी कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया गया। उसी दौरान कई और मशहूर कंपनियों को अपने आप को रोकना पड़ा, जैसे एचएमटी, बजाज स्कूटर, डायनोरा, मर्फी, राजदूत, नोकिया, एम्बेसडर इत्यादि। यह सभी कंपनियों में से किसी की भी गुणवत्ता खराब नहीं थी। फिर भी ये कंपनियां बाहर हो गईं, क्योंकि वे समय के साथ खुद को बदल नहीं पाईं।

वर्तमान क्षण को देखते हुए आप यह भी सोचें कि अगले दश सालों में दुनिया कितनी बदल सकती है और ऐसा भी हो सकता है कि आज की 70%-90% नौकरियां अगले 10 सालों में पूरी तरह से खत्म हो जाएंगी। हम धीरे-धीरे 'चौथी औद्योगिक क्रांति' के दौर में प्रवेश कर रहे हैं। आज की

मशहूर कंपनियों पर गौर करें तो, उबर सिर्फ एक सॉफ्टवेयर कंपनी का नाम है। उनके पास अपनी कोई कार नहीं है। फिर भी आज दुनिया की सबसे बड़ी टैक्सी फेयर कंपनी है। एयर बीएनबी आज दुनिया की सबसे बड़ी होटल कंपनी है। लेकिन मज़ेदार बात यह है कि दुनिया में उनके पास एक भी होटल नहीं है। इसी तरह पेटीएम, ओला कैब, ओयो रूम्स आदि जैसी अनगिनत कंपनियों के उदाहरण दिए जा सकते हैं। आज अमेरिका में नए वकीलों के लिए कोई काम नहीं है, क्योंकि आईबीएम वॉटसन नामक एक कानूनी सॉफ्टवेयर किसी भी नए वकील से कहीं बेहतर वकालत कर सकता है। इस प्रकार अगले दश सालों में अमेरिकियों के पास भी बहुत कम नौकरियां होंगी और शेष जो बच जाएगा वे विशेषज्ञ होंगे। वॉटसन सॉफ्टवेयर कैंसर और दूसरी बीमारियों का पता इंसानों से चार गुना ज़्यादा बेहतर से लगा सकता है। कहा जा रहा है कि 2030 तक कंप्यूटर इंटेलिजेंस मानव इंटेलिजेंस से आगे निकल जाएगा।

वहीं अगले 20 सालों में आज की 90% कारें सड़कों पर नहीं दिखेंगी। बची हुई कारें या तो बिजली से चलेंगी या हाइब्रिड कारें होंगी। सड़कें धीरे-धीरे खाली हो जाएंगी। गैसोलीन की खपत कम हो जाएगी और तेल उत्पादक देश धीरे-धीरे दिवालिया हो सकता है। वहीं ऐसा कहा जा रहा कि बिना ड्राइवर के गाड़ी चलाने से दुर्घटनाओं की संख्या 99% कम हो जाएगी और इसीलिए हो सकता है कार बीमा कंपनीया बंद हो कर बाहर हो जाएं। जब 90% वाहन सड़क से गायब हो जाएंगे, तो ट्रैफिक पुलिस और पार्किंग कर्मचारियों की क्या ज़रूरत।

जरा सोचिए पिछले सिर्फ 10 साल पहले गली-मोहल्लों में एसटीडी बूथ हुआ करते थे। देश में मोबाइल क्रांति के आने के बाद ये सभी एसटीडी बूथ बंद होने को मजबूर हो गए। जो बच गए वो मोबाइल रिचार्ज की दुकानें बन गए। फिर मोबाइल रिचार्ज में ऑनलाइन क्रांति आ गई और लोग घर बैठे ऑनलाइन ही अपने मोबाइल रिचार्ज करने लगे। फिर इन रिचार्ज की दुकानों को बदलना पड़ा। अब ये सिर्फ मोबाइल फोन खरीदने-बेचने और रिपेयर की दुकानें रह गई हैं। लेकिन ये भी बहुत जल्द बदल जाएगा क्योंकि अमेज़न, फ्लिपकार्ट इत्यादि से सीधे मोबाइल फोन की बिक्री बढ़ रही है। वहीं पैसे की परिभाषा भी बदल रही है। शायद इसीलिए कहते हैं कि जो लोग उम्र के साथ नहीं बदल सकते, उम्र उन्हें धरती से हटा देती है।

विकास और व्यापार के समग्र दृष्टिकोण में सुधार और निवेश के संकेत के साथ आशावादी रुप से बढ़ रही है। यहां सिर्फ कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएस-आर) 2013 अधिनियम हमारे समाज कि अपेक्षाओं पर कितना कारगर होगा यह सोचने वाली बात है। इसलिए बढ़ती तकनीकीकरण व प्रगति के बीच कॉरपोरेट सेक्टर व सरकार को अपनी सोच और दिशा पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा ताकि बढ़ती तकनीक की दौड़ में समाज की अपेक्षाओं के साथ-साथ समस्त प्राणी का भरण पोषण हो सके।

मानसी किंडरगार्टन का 56वां वार्षिक समारोह आयोजित

हावड़ा : हावड़ा के बालीटिकुड़ी बाम्मपाड़ा में स्थित मानसी किंडरगार्टन स्कूल का 56वां वार्षिक समारोह शुक्रवार को धूमधाम से आयोजित हुआ। हावड़ा के शरत सदन सभागार में आयोजित वार्षिक समारोह के मौके पर शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने नृत्य-संगीत, नाटक आदि के माध्यम से मनमोहक प्रस्तुति दी। समारोह में विद्यालय के प्रबंधक तमल दत्ता, प्रधानाध्यापिका सुदीप्ता दास सहित रामकृष्ण स्कूल के हेडमास्टर अमिताभ चक्रवर्ती और नृत्यांगना कश्मीरा सेन व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं, उनके अभिभावक और स्कूल के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं समारोह में मौजूद रहे। विद्यालय के प्रबंधक तमल दत्ता ने बताया कि 2 फरवरी 1969 को 'मानसी किंडरगार्टन' की स्थापना हुई थी। स्वर्गीय मदनमोहन दत्त, जो पेशे से शिक्षक थे ने इसकी स्थापना की थी। बच्चों के लिए पढ़ाई के साथ-साथ डांस, गाना, पाठ, नाटक, चित्रकारी, खेल, व्यायाम सबकी एक जगह व्यवस्था हो, इस उद्देश्य से इस संस्थान की उन्होंने स्थापना की थी। आज यह इन सभी सुविधाओं से युक्त एक शैक्षिक खजाना है। उनके सपनों का 'मानसी किंडरगार्टन' 56 वर्षों से चल रहा है और अपने विशिष्ट लक्ष्यों में निरंतर परिवर्तन के साथ लगातार आगे बढ़ रहा है। आज भी यह स्कूल बालिटिकुड़ी और आसपास के इलाकों में छोटे बच्चों के विकास के लिए एक उत्कृष्ट संस्थान है।वर्तमान में विद्यालय का प्रबंधक तमल दत्ता एवं प्रधानाध्यापिका सुदीप्ता दास हैं।

महिलाओं की सुरक्षा के लिए पिंक मोबाइल वैन किया लॉन्च

हावड़ा : देश भर में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में खतरनाक वृद्धि के जवाब में, हावड़ा सिटी पुलिस ने पिंक मोबाइल वैन लॉन्च करके एक सक्रिय कदम उठाया है। यह एक महिला सुरक्षा परियोजना है। इस पहल का उद्देश्य घरेलू हिंसा, पीछा करना, छेड़छाड़, साइबर धमकी और सार्वजनिक अपमान जैसे अपराधों को रोकने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, पिंक मोबाइल परियोजना का उद्देश्य एक अनुकूल वातावरण बनाना है जहां महिलाएं बिना किसी डर के आगे बढ़ सकें। हावड़ा सिटी पुलिस के तीन डिवीजन में तीन पिंक मोबाइल वैन काम करेंगे। ये मोबाइल वैन पूरे कस्बों में सतर्क रहेंगी, खासकर उन इलाकों में जहां लड़कियों और महिलाओं का जमावड़ा होता है, जिसमें शैक्षणिक संस्थान, अस्पताल, गर्ल्स हॉस्टल, बाजार शामिल हैं। प्रत्येक मोबाइल का नेतृत्व एक महिला पुलिस अधिकारी और महिला कांस्टेबल करेंगी। आगामी दुर्गा पूजा की पूर्व संध्या पर पश्चिम बंगाल पुलिस ने अपने महिला दस्ते के माध्यम से महिलाओं को सहायता प्रदान करने के लिए यह पहल की है। इस परियोजना का उद्देश्य न केवल मौजूदा मुद्दों को संबोधित करना है, बल्कि पहले से मौजूद योजनाओं की प्रभावशीलता को सुधारना और बढ़ाना भी है, जिससे यह महिलाओं की सुरक्षा की दिशा में एक अग्रणी कदम बन जाएगा।

पशुपालक के द्वार पर पशु चिकित्सा

बक्सर (अमित राय) : जिला पदाधिकारी बक्सर, अंशुल अग्रवाल के द्वारा पशुपालकों के द्वार पर पशु चिकित्सा (डोर स्टेप पशु चिकित्सा सेवा) सुविधा उपलब्ध कराने हेतु जिला के सभी 11 प्रखंडों के लिए एक-एक मोबाइल पशु चिकित्सा इकाई के परिचालन का शुभारम्भ समाहरणालय परिसर से वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। जिला पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि सामान्य परिस्थिति में मोबाईल पशु चिकित्सा इकाई का परिचालन कार्य दिवसों में प्रातः 09:00 बजे से संध्या 05:00 बजे तक किया जाएगा। जिला के पशुपालक उक्त अवधि में टॉल फ्री नम्बर 1962 पर कॉल कर अथवा मोबाईल एप के माध्यम से पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, पटना में संचालित कॉल सेन्टर में पशु चिकित्सा हेतु सम्पर्क कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त मोबाईल पशु चिकित्सा इकाई के द्वारा प्रत्येक कार्य दिवस में 02 (दो) ग्रामों का भ्रमण किया जाएगा एवं शिविर के माध्यम से पशुओं की चिकित्सा तथा विभागीय योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया जाएगा। इस योजना का मुख्य उद्देश्य मोबाईल पशु चिकित्सा इकाई के माध्यम से पशुपालक के द्वार पर पशु चिकित्सा उपलब्ध कराना है। इससे होनेवाले लाभ निम्न प्रकार हैं:- 'सुदूर इलाकों से बीमार पशुओं को पशु चिकित्सालय लाने में होने वाली कठिनाईयों से पशुपालकों को राहत मिलेगी।' 'बीमार पशुओं को पशु चिकित्सालय लाने में लगने वाले समय एवं व्यय की बचत', 'अस्वस्थ पशुओं की त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा','त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा के फलस्वरूप पशुओं के स्वास्थ्य एवं उत्पादकता में सुधार एवं पशुओं के संक्रामक रोग फैलने की स्थिति में रोग की त्वरित जाँच एवं प्रभावी नियंत्रण करना है'। कार्यक्रम में उप विकास आयुक्त बक्सर, जिला पशुपालन पदाधिकारी बक्सर, भ्रमणशील पशु चिकित्स एवं अन्य संबंधित उपस्थित थे।

दुर्गापूजा 2024 ऑनलाइन पोर्टल की शुरुवात बी.के.पी.सी.

नॉर्थ 24 परगना (संघमित्रा सक्सेना) : बैरकपुर पुलिस

कमिश्नरेट ने 'दुर्गापूजा 2024' के लिए ऑनलाइन पोर्टल की शुरुवात की। 'दुर्गापूजा 2024' पोर्टल में पंडाल हॉपिंग की गाइडेंस, मुख्य पूजा पंडाल की तथ्य, उत्सव के माहौल में विपरीत परिस्थिती से निपटाने तथा नागरिकों की सुविधा की खास ध्यान रखी गई हैं। बता दे कि डिजिटल भारत में ऑनलाइन में आज हर सुविधाएं उपलब्ध हैं। दुर्गापूजा एवं नवरात्रि की पावन पर्व में लोग भरपूर अपनी उत्सव की लुफ्त उठा सके इसलिए 'दुर्गापूजा 2024' हमेशा तत्पर है। सुकांत सदन बैरकपुर में हुए पोर्टल लॉन्च कार्यक्रम में कमिश्नर ऑफ बैरकपुर पुलिस, (आई.पी. एस.) आलोक राजोरिया की उपस्थिति में 'दुर्गापूजा 2024' ऑनलाइन पोर्टल की शुरुवात की गई। इसके अलावा कई विशिष्ट लोग एवम पुलिस अधिकारी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाए।

लिलुआ रेल वर्कशॉप में 5 रोटियाँ प्रति सेकंड में भोजन तैयार करने की नई मशीन

हावड़ा : ट्रेनों की मरम्मत में अब और खामियां नहीं रखी जा सकेंगी। कार्यस्थल पर हर सेकंड महत्वपूर्ण है। अब रेलवे समय का पूरा सदुपयोग करना चाहता है। रेलवे ने तत्काल गर्म भोजन उपलब्ध कराने के साथ ही कोच और वैगन रखरखाव डिपो में खाने-पीने में समय की बर्बादी रोकने की पहल की है। वर्कशॉप की कैंटीन में सारा खाना मशीनों से तैयार किया जाएगा। रेलवे ने यह प्रोजेक्ट लोगों को जल्दी गर्म खाना मिले और उसे खाकर जल्दी से काम पर जुटने के उद्देश्य से लिया है। इस तरह की मशीन को पूर्वी रेलवे के लिलुआ वर्कशॉप में विश्वकर्मा पूजा के दिन लॉन्च किया गया। पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर यह मशीन यहां काम करने लगी है। लिलुआ वर्कशॉप के चीफ वर्क्स मैनेजर जतीश कुमार ने बताया कि यह मशीन समय बचाने के साथ गर्म खाना परोसने का काम करेगी। पूरी तरह मशीनीकृत यह मशीन प्रति सेकेंड पांच रोटियां बनाएगी। आटा गूंथने से लेकर लेचे बनाने, रोटी बनाने और आलू बनाने तक सब काम मशीन में हो जाएगा। दो लाख रुपए की इस मशीन में गर्म खाना मिलेगा। हाथ से रोटी बनाने में इतना समय लग जाता था। परिणामस्वरूप, एक ही समय में बड़ी संख्या में श्रमिकों को खाना खिलाना मुश्किल हो गया। अब इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। इससे कर्मचारी समय पर खाना खा सकेंगे और काम पर आ सकेंगे। इस पर काम करने के लिए काफी समय भी मिलेगा।

ट्रेनों को दुर्घटना मुक्त और अच्छी स्थिति में रखने में वर्कशॉप महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लिलुआ कार्यशाला भी इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इस डिपो में कैरिज एंड वैगन शॉप है। जहां कोचों और वैगनों की मरम्मत की जाती है। ट्रॉली के पहिये के हिस्सों और बॉडी की मरम्मत के लिए अलग-अलग अनुभाग हैं। चूंकि अब लगभग सभी एलएचबी कोच हैं, इसलिए कोचों को पहले की तरह मैन्युअल रूप से पेंट नहीं किया जाता है। अब रेत विस्फोट से जंग हटा दी जाती है। उसके बाद पीयू को पेंट किया जाता है। बॉडी की सभी स्टील प्लेटें जे-सोप से बनी हैं। इसके अलावा क्रेन सेक्शन, वेल्डिंग सेक्शन भी हैं। डब्ल्यूटीए के के-सूप में पहियों और एक्सल का परीक्षण अल्ट्रा साउंड द्वारा किया जाता है। और भी कई महत्वपूर्ण श्रेणियां हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य को हजारों कर्मचारी संभालते हैं। एक ट्रेन के मामले में आवधिक ओवरहालिंग यानी नियमित रखरखाव में लगभग चार घंटे लगते हैं। उस समय में काम पूरा करने के लिए आपको हर पल का उपयोग करना होगा।

श्री श्री गणपति पूजा समिति का रजत जयंती वर्ष

हावड़ा : हावड़ा, ओड़िया पाड़ा, 'श्री श्री गणपति पूजा समिति' वर्ष 2024 में अपना रजत जयंती महोत्सव मना रहा है। वर्ष 2000 से शुभारंभ हुई धार्मिक अनुष्ठान (श्री गणेश पूजा), प्रत्येक वर इ धूमधाम से मनाई जाती है, इस वर्ष यह पुजा अपना 25वां साल पूरा करते हुए संस्था द्वारा रजत जयंती महोत्सव को विशेष रंगों में रंगने का भरपूर प्रयास किया गया। जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे कि नृत्य-संगीत का आयोजन किया गया। वहीं भगवान श्री गणेश की प्रतिमा व पूजा मण्डप भी इलाके में चर्चा का विषय बना हुआ है। वहीं संस्था के सदस्य विशाल जयसवाल तथा चेयरमैन एडवोकेट राम चन्द्र अग्रवाल ने बताया कि सोमवार 9 सितंबर को संध्या 8 बजे से महाभोग प्रसाद का वितरण किया गया जिसमें सैकड़ों लोग सम्मिलित हों प्रभु श्री गणेश जी का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। पूजा मण्डप का उद्घाटन 6 सितंबर को विशेष अतिथियों की मौजूदगी में दीप प्रज्वलित कर किया गया। स्कॉन, कोलकाता के श्रीमान महारास दास जी के हाथों दीप पजलितकर कर किया गया।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का पुनर्गठन

अंधराठाढ़ी : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद इकाई अंधराठाढ़ी का पुनर्गठन किया गया। जिसमें एबीवीपी जिला संयोजक निखिल झा, प्रांत कार्यकारिणी सदस्य नितिश झा, दिव्यानी मेहता, मनीष झा भी मोजूद थे। मौके पर कार्यकर्ताओं को नये दायित्व दिया गया। जिसमें नगर अध्यक्ष लक्ष्मण कुमार, उपाध्यक्ष कृष्ण यादव , नगर मंत्री राघव कुमार, नगर सह मंत्री शुभम चौधरी , सत्यम चौधरी, गुलशन यादव, सुरेश झा, नगर कोषाध्यक्ष पशुपति कुमार , सरोज राम, दिव्यांशु मेहता , जयदीप कुमार, सुंदर कुमार , कृति राजपूत, भावेश कुमार, आयुष पाठक, कुणाल राय, शिवम झा, अंकित झा भी उपस्थित थे। सभी सदस्यों ने अपने कर्तव्य को निष्ठापूर्वक करने के लिए उत्सुक दिखे।

वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ प्रतिमा निर्माण हेतु मिट्टी संग्रह का आयोजन

हावड़ा : आगामी शारदीय नवरात्रि में होने वाली जगत जननी मां दुर्गा की प्रतिमा निर्माण को लेकर अंधराठाढ़ी प्रखंड क्षेत्र के गंगद्वार हाट गाछी चौक स्थित नव दुर्गा पूजा समिति के सदस्यों एवं ग्रामीणों द्वारा मंगलवार को गाजे बाजे के साथ मिट्टी कोड़ाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन कुमार उग्रानंद भगत व संयुक्त रूप से समस्त ग्रामीण के नेतृत्व में हुआ। मंदिर में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ जगत जननी मां जगदम्बा की विधिवत पूजा अर्चना की। तत्पश्चात समिति के सदस्य व ग्रामीण सहित अन्य भक्तों ने गाजे-बाजे के साथ मां दुर्गा के जयकार लगाते हुए हाई स्कूल गंगद्वार से होते हुए रजनपुरा गांव के समीप गंगद्वार कमला नदी में पहुंचे। गंगद्वार में कमला नदी के समीप विधिवत मिट्टी की पूजा अर्चना के बाद मिट्टी खुदाई का कार्यक्रम किया गया।

बताया गया कि आने वाले दुर्गा पूजा के प्रतिमा निर्माण इसी मिट्टी से होना है। कार्यक्रम में पूर्व मुखिया कुमार उग्रानंद भगत,पंचायत समिति प्रतिनिधि रमन कुमार साफी, प्रमोद कुमार साहू,वार्ड सदस्य विप्रेश पासवान, डॉक्टर कुमार चन्द्र शेखर भगत, किशोर भगत, निरज कुमार भगत, दिनेश चौधरी, सोनू मंडल, राधेश्याम पासवान,संतोष ठाकुर, मनोज ठाकुर, राहुल भगत, गणेश भगत, हिमांशु भगत, मुन्ना भगत, सुमित साहू, सुंदर साहू, शम्भु चौधरी, रनधीर भगत,ललित भगत, नवीन पासवान, प्रशांत भगत सहित आदि मौजूद थे।

गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड बी. गार्डन के द ग्रेट बनियान ट्री का छिना ताज

हावड़ा : क्या आप जानते हैं ग्रेट बनयान ट्री कहां स्थित है अगर आपका जवाब आता है कि पश्चिम बंगाल के हावड़ा में स्थित अचार्य जगदीश चंद्र बसु उद्यान में स्थित है तो आपका यह जवाब गलत साबित होगा, क्योंकि ग्रेट बनयान ट्री का ताज 1984 में जो गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज होने पर मीला हुआ था वह अब इस उद्यान से छिन गया है। इसका कारण यह है कि अपने ही देश भारत के आंध्र प्रदेश राज्य के अनंतपुर जिला स्थित चिनम्मापुर में स्थित एक विशालकाय बट वृक्ष अपने नाम कर लिया है। अचार्य जगदीश चंद्र बसु उद्यान के अधिकारी डॉक्टर देवेंद्र सिंह ने बताया कि क्षेत्रफल के हिसाब से 1984 में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में तकरीबन साल पुराना द ग्रेट बनियान ट्री के नाम से जो ताज मिला था वह अभी छिन गया है या यू कहे की आंध्र प्रदेश के विशालकाय बट वृक्ष के नाम दर्ज हो गया लेकिन मैं आपको बता दूं कि यह सिर्फ क्षेत्रफल के हिसाब से हुआ है जबकि अगर उनकी शाखों को लेकर देखा जाए तो इस उद्यान के विशालकाय बट वृक्ष की शाखाएं तकरीबन 5000 से ज्यादा है। और यह शहरी इलाके में एक उद्यान में स्थित है वहीं आंध्र प्रदेश में स्थित वह विशालकाय वट वृक्ष जंगल में है और उनकी शाखाएं 5000 से कम है। अतः हम लोगों का एक साइंटिफिक दाल इसी महीने आंध्र प्रदेश स्थित इस विशालकाय वट वृक्ष के क्षेत्रफल व उनकी अन्य जानकारी एकत्र

करने के लिए रवाना होगी साथ ही गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दोबारा इस उद्यान के विशालकाय बट वृक्ष को पुनः दर्ज कर ताज को वापस लेने के लिए हम लोग फिर से अपील करेंगे। अभी वर्तमान 19667 स्क्वायर मीटर में अचार्य जगदीश चंद्र बसु उद्यान में यह ग्रेट बनयान ट्री विशालकाय वट वृक्ष फैला हुआ है जबकि आंध्र प्रदेश में जो बट वृक्ष गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज हुआ है उसका क्षेत्रफल 21 000 स्क्वायर मीटर बताया जा रहा है इस हिसाब से वह अपना क्षेत्रफल के हिसाब से दिखा रहे हैं, जबकि हम लोगों का कहना है कि हमारे उद्यान का वृक्ष एक सीमित गोलाकार आकृति में फैला हुआ है और आंध्र प्रदेश स्थित विशालकाय बट वृक्ष अपनी शाखों के साथ की आकृति में फैली हुई है। इसलिए हम लोगों का एक साइंटिफिक दल इसी महीने अनंतपुर के दौरे पर जाएंगे और पूरी तरह से जांच कर फिर से गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करने के लिए अपील करेंगे। साथी यह भी बता दूं कि इस उद्यान में इस विशालकाय बट वृक्ष की देखभाल के लिए किसी भी तरह का कोई फंगस इस पर हमला न करें क्योंकि इससे पहले हमला कर चुका है काफी वर्षों पहले इसको देखते हुए इस पर एक दवाई का लेप इसके जड़ों पर किया जाता है दो से ढाई फुट तक साथ ही इसकी देखरेख एक स्पेशल टीम के द्वारा की जाती है उनकी निगरानी में यह वृक्ष और भी अपने क्षेत्रफल को बढ़ा रही है और साथी उनकी शाखाएं बढ़ रही है।

छठ की तरह तीन दिनों तक चलता है जिउतिया व्रत

संतान प्राप्ति, लंबी आयु और सुखमय जीवन के लिए हिंदू धर्म में महिलाओं द्वारा रखे जाने वाले व्रत को जिउतिया या जीवित्पुत्रिका व्रत कहा जाता है. जिउतिया व्रत हर साल अश्विन मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को रखा जाता है. इस दिन महिलाएं अपनी संतान की लंबी आयु, सुखमय जीवन और संतान प्राप्ति के लिए निर्जला व्रत रखती हैं. जिउतिया पर्व खासतौर से उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में धूम-धाम से मनाया जाता है. तीन दिनों तक चलने वाले इस व्रत को सभी व्रतों में सबसे कठिन व्रत माना गया है. जिउतिया व्रत में सप्तमी तिथि के दिन नहाए खाए, अष्टमी के दिन जिउतिया व्रत और नवमीं के दिन व्रत का पारण किया जाता है.

जिउतिया व्रत का महत्व : धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस व्रत का महत्व महाभारत से जुड़ा है. कहते हैं कि उत्तरा के गर्भ में पल रहे पांडव पुत्र को बचाने के लिए श्री कृष्ण ने अपने सारे पुण्य कर्मों को लगा दिया था. और उसे पुनर्जीवित कर दिया था. तब से ही स्त्रियां कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को निर्जला व्रत रखकर अपनी संतान की लंबी आयु की कामना करती हैं. कहते हैं कि इस व्रत से श्री कृष्ण भगवान प्रसन्न होकर व्रती स्त्रियों की संतान की रक्षा करते हैं.

जिउतिया व्रत कथा : जिउतिया की व्रत कथा पढ़ने भर से ही संतान को लंबी आयु का वरदान मिल जाता है. पौराणिक कथा के अनुसार एक बार एक पेड़ पर गुरुड़ और लोमड़ी रहते थे. दोनों ने कुछ महिलाओं को पूजा और उपवास करते देखा तो उनका भी जिउतिया व्रत करने का मन कर गया. दोनों ने भगवान श्री जीऊतवाहन की पूजा और व्रत करने का संकल्प लिया. लेकिन जिस दिन दोनों को व्रत रखना था, उस दिन गांव के एक बड़े व्यापारी की मृत्यु हो गई और उसके शव को देखकर लोमड़ी अपनी भूख पर काबू न पा सकी. और उसने चुपके से व्रत तोड़ते हुए भोजन कर लिया. दूसरी ओर, चील ने पूरे समर्पण के साथ व्रत का पालन किया और उसे पूरा किया. परिणामस्वरूप, अगले जन्म में लोमड़ी से पैदा हुए सभी बच्चे जन्म के कुछ दिन बाद ही मर जाते थे, और चील को एक-एक करके सात लड़के पैदा हुए.

गबन के आरोपि को पद से अविलंब बर्खास्त किया जाये

मधुबनी : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने लनामिवि में व्याप्त शैक्षणिक एवं प्रशासनिक अराजकता, नामांकन में मनमानी, फीस वसूली व परीक्षा परिणाम में त्रुटियों के खिलाफ विश्वविद्यालय मुख्यालय पर प्रदर्शन किया. बाद में छात्र संगठन की ओर से कुलसचिव डॉ अजय कुमार पंडित के साथ बैठक हुई. इस दौरान छात्र हित से संबंधित 15 सूत्री मांग पत्र कुलसचिव को सौंपा गया।कुलसचिव से उनकी मांगों पर आश्वासन के बाद आंदोलन समाप्त किया गया. ज्ञापन में कहा है कि लनामिवि के जिन शिक्षाकर्मियों को रुपये गबन के मामले में एसवीयू (स्पेशल

विजिलेश यूनिट) ने नामजद अभियुक्त बनाया है, उन सभी पदाधिकारियों का पद से अविलंब बर्खास्त किया जाय. सुदूर ग्रामीण एवं दूर-दराज से विवि मुख्यालय आने वाले छात्रों के लिए यहां मूलभूत सुविधा युक्त प्रतीक्षालय का निर्माण कराया जाये. विश्वविद्यालय क्षेत्र अंतर्गत एवं अन्य जिलों से आये छात्रों की सुविधा एवं समस्या समाधान के लिए विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर हेल्पलाइन नंबर जारी कर उसका संचालन सुचारु रूप से किया जाय. शोधार्थी छात्रों के लिए छात्रावृति, छात्रावास एवं लैब की व्यवस्था, पैट की परीक्षा शीघ्र लेने विश्वविद्यालय एवं कॉलेज में छात्रावासों की व्यवस्था में सुधार, पीजी विभाग सहित कॉलेजों में पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तकालय में पुस्तक की व्यवस्था एवं रीडिंग रूम का संचालन सुनिश्चित करने की मांग की गयी. साथ ही दीक्षांत समारोह प्रतिवर्ष आयोजित कर समय पर मूल प्रमाण पत्र जारी करने की व्यवस्था की मांग की गयी, ताकि छात्रों को विश्वविद्यालय द्वारा वसूले जा रहे मनमाने चालान शुल्क पर रोक लग सके।प्रतिनिधिमंडल ने बताया कि कुलसचिव ने सभी विषयों पर सकारात्मक आश्वासन दिया. संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को निर्देश देकर समस्या के शीघ्र निदान करने का भरोसा दिया है। प्रदर्शन में बिरौल के विभाग संयोजक राहुल सिंह, मधुबनी इंझारपुर के विभाग संयोजक रोहित झा, इंझारपुर के जिला संयोजक निखिल झा, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य विकास कुमार, मनोज मिश्रा, शास्वत खेहिल, जिला एसएफडी संयोजक शशिभूषण यादव, रंजीत मालाकार, कुणाल कुमार, शुभम चौधरी,प्रिंस कुमार, सुजीत यादव, सत्यम कुमार, केतन राज, आकाश कुमार आदि शामिल थे।

श्याम बाबा पंचवटी कॉम्प्लेक्स में दुर्गा पूजा का आयोजन

कैखाली श्याम बाबा कॉम्प्लेक्स रेजिडेंट्स वैल्फेयर सोसाइटी की ओर से पहली बार श्याम बाबा पंचवटी कॉम्प्लेक्स में दुर्गा पूजा का आयोजन किया जाएगा। इसको लेकर तैयारियां पूरी है, जहां खुटी पूजा के द्वारा शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर कॉम्प्लेक्स के सदस्यों ने बड़े उत्साह के साथ कार्यक्रम में शामिल हुए,रेजिडेंट सोसाइटी के अध्यक्ष संजय अग्रवाल के नेतेत्व में ये कार्यक्रम किया जा रहा है, इस दौरान उपस्थित थे प्रकाश सराफ, सुनील चौधरी, सज्जन शर्मा, अनिल चौधरी, रमेश वर्मा, प्रदीप गोएनका, अमित पाठक, संदीप शर्मा, रवि लोहिया,अंशुल चौधरी , देवकांत महावार, अनिर्बान राय, रूपम बनर्जी, नितिन अग्रवाल मोहित जैन, सौरव सुराना व वैभव सराफ ये जानकारी संजीव शर्मा ने दी।

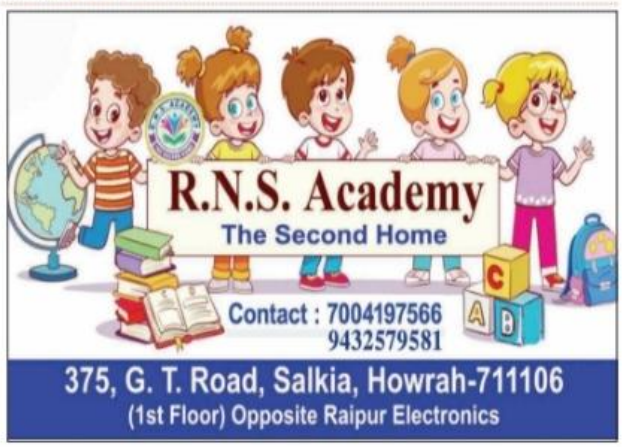

स्वत्वाधिकारी 'बात हिन्दुस्तान की' (पाक्षिक) पत्रिका के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी. गार्डन, शिवपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन नं.: 8902221434 से प्रकाशित एवं चपला मुद्रण, 2/3/1, रामजी हजरा लेन, हावड़ा-711101 से मुद्रित, सम्पादक-उमेश तिवारी, फोन- 8420899919 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी, ईमेल/वेबसाईट-www.baathindustanki@gmail.com
(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan Ki' : Smt. Soni kumari Jha, 23, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO : B.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from CHAPLA MUDRAN 2/3/1 Ramji Hazra Lane, Shibpur, Howrah-711101, Editor : **Umesh Tiwari** Mo. 8420899919, Email/Website : www.baathindustanki@gmail.com)